Class. B. Com II

Subject - M.F.S

Papex — IV (S)

Topic - पूँजीवादी, समाजवादी एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था में मुद्रा की भूमिका

Lecture Sequence No - 1

Prepared by -

Dr Chandreshwar Prasad Sahu

Assistant Professor

Department of Commerce

Marwari College Darbhanga

Email - CPSahu5161@gmail.com

पूँजीवादी, समाजवादी एवं नियोजित अर्थव्यवस्था में मुद्रा की भूमिका :—

मुद्रा किसी देश की सामान्य आर्थिक क्रियाओं का नियमन करती है तथा आर्थिक विकास को गतिशील बनाने में सहायक होती है। मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित तथा पूरा करने के लिए उसके पास साधन सीमित है। प्रत्येक व्यक्ति यह चुनाव अथवा निर्णय करता है कि उसे कौन सी आवश्यकता पहले तथा कौन सी बाद में करनी है।

प्रत्येक आर्थिक कार्य, वस्तु अथवा सेवा को मुद्रा रूपी पैमाने से मापा जा सकता है। राष्ट्रीय आय किसी देश की प्रति व्यक्ति ~~आय~~ आय और इस तरह आर्थिक प्रगति को भी मुद्रा से मापा जाता है। यदि मुद्रा न होती तो अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास के शिखर पर न पहुँचती।

मुद्रा की भूमिका प्रत्येक आर्थिक प्रणालियों पूँजीवादी, समाजवादी एवं नियोजित अर्थव्यवस्था में विद्यमान है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में मुद्रा — पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में सभी वर्गों की आर्थिक क्रियाएँ उनके निजी हितों से प्रभावित होती है उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है तो उत्पादक अपने लाभ को अधिकतम बनाना चाहता है। इस तरह पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता, उत्पादक तथा साधनों के स्वामी अपनी आर्थिक क्रियाओं के संचालन में स्वतंत्र होते हैं।

उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में तेजी से विशिष्टीकरण बढ़ा है उसी तेजी से पूँजी के लिए मुद्रा की माँग में वृद्धि हुई है। पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजी और मुद्रा का आपसी संबंध इसलिए भी अधिक है कि पूँजी का संग्रह मुद्रा के माध्यम से होता है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में मुद्रा धन कमाने, संग्रह करने तथा व्यापार और उद्योग का आकार बढ़ाने का साधन बनती है। यही नहीं वितरण और उपभोग की क्रियाओं को सरल बनाने में मुद्रा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। मुद्रा के बिना पूँजीवादी ~~अर्थ~~ अर्थतन्त्र एक दिन भी टिक पाना सम्भव नहीं है, ~~क्योंकि~~ क्योंकि बड़े पैमाने पर क्रय-विक्रय तथा लेन देन का मुद्रा जैसा स्वस्थ आधार पा सकना असम्भव है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था - समाजवादी अर्थव्यवस्था आर्थिक प्रणाली का वह रूप है जिसमें उत्पत्ति के भौतिक साधनों पर समाज अथवा राज्य का स्वामित्व होता है। इस प्रणाली में उत्पादन की मात्रा व किस्म, मजदूरी की दरें, वितरण प्रणाली तथा वस्तुएँ की कीमतें इत्यादि राज्य सरकार द्वारा नियंत्रित होती है। अतः संगठित बाजार स्वतंत्र माँग व पूर्ति के प्रभावों से कीमत निर्धारित किये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। मुद्रा ही वस्तुओं के विनिमय का माध्यम तथा मूल्य का मापक है लेकिन मूल्यों का निर्धारण सरकार द्वारा ही किया जाता है। उत्पादन केवल उन्हीं वस्तुओं का तथा उतनी ही मात्रा में किया जाता है जिन्हें सरकार चाहती है।

Date
Page

पूँजीवादी व्यवस्था अथवा समाजवादी व्यवस्था में मुद्रा के माध्यम से जिस सरलता से हो सकता है उतनी सरलता से किसी अन्य साधन द्वारा नहीं हो सकता। माल के वितरण की प्रणाली अथवा मूल्य निर्धारण की व्यवस्था ~~चकोर~~ अपने तरीके से कर सकती है। इसमें मुद्रा का हस्तक्षेप अनिवार्य नहीं है।

नियोजित अर्थव्यवस्था - नियोजित अर्थव्यवस्था प्रणाली का वह स्वरूप है जिसमें एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा सम्पूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था के विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर आर्थिक निर्णय लिये जाते हैं तथा इन्हीं निर्णयों के आधार पर देश का आर्थिक विकास किया जाता है।

~~मिश्रित~~ मिश्रित अर्थव्यवस्था में वास्तव में मुद्रा का वही स्थान या महत्व है जो पूँजीवादी व्यवस्था में होता है क्योंकि उद्योग, व्यवसाय, परिवहन, बैंक, देशी तथा विदेशी व्यापार इत्यादि के कुछ भाग पर सरकारी स्वामित्व होता है और शेष भाग पर निजी पूँजी पतियों का अधिकार होता है।

सरकार द्वारा देश के आर्थिक विकास के लिए निश्चित क्षेत्रों के लिए निश्चित योजनाएं बनायी जाती हैं। देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों के लिए उदारतापूर्वक ~~धन~~ धन की व्यवस्था की जानी चाहिए तथा ~~के~~ अन्य क्षेत्रों को धन देने ~~के~~ में सतर्कता रखनी चाहिए।

मुद्रा का प्रयोग अथवा उपयोगिता मिश्रित अर्थव्यवस्था में भी समाजवादी और पूँजीवादी व्यवस्थाओं के समान ही ~~रहेगी~~ रहेगी।

=